वेस्ट टू वेल्थ

नगर पालिका परिषद् ज्योर्तिमठ (जोशीमठ) में स्थापित मैटीरियल रिकवरी सेन्टर (एम.आर.एफ.) में प्लास्टिक अपशिष्टों को 34 श्रेणियों में छटनी की जा रही है तथा इससे नगर पालिका द्वारा अब तक रू0 1.15 करोड़ से अधिक की धनराशि अर्जित की गयी है। इससे ना सिर्फ पालिका की आय के साथ पर्यावरण संरक्षण भी सुनिश्चित की जा रही है। यह पहल रोजगार का साधन भी है इसमें कार्य करने वाले दैनिक कार्मिकों की संख्या 7 से बढ़कर 20 की गयी है तथा मानदेय रू. 250 से बढ़कर रू. 550 प्रतिदिन किया गया है। इस प्रयास को प्रदेश के 65 से अधिक नगर निकायों में विस्तारित कर किया गया है। पालिका द्वारा प्लास्टिक कचरे के को पुनः उपयोग हेतु पार्कों में प्लास्टिक के फर्नीचर स्थापित किये हैं।

प्लास्टिक कचरे के कारण चुनौतियां

जोशीमठ बद्रीनाथ, हेमकुंड साहिब और औली जैसे पर्यटन स्थलों के लिए मुख्य शहर है। हालांकि, यात्राकाल के दौरान शहर में पर्यटकों की भारी भीड़ होती है, जिसके परिणामस्वरूप प्लास्टिक कचरे का ढेर लग जाता है जो पर्यावरण के लिए खतरा बन जाता है। प्लास्टिक कचरे का संग्रह, भंडारण, मानव संसाधन और परिवहन इस शहर की स्वच्छता और सुंदरता को बनाए रखने में चुनौतीपूर्ण कार्य साबित हुए हैं।

प्लास्टिक कचरा प्रबन्धन हेतु अभिनव पहल

नगर पालिका परिषद द्वारा वर्ष मटेरियल रिकवरी फैसिलिटी (एम.आर.एफ.) की स्थापना की गई जिसका मुख्य लक्ष्य घर–घर जाकर व्यावसायिक क्षेत्रों और घरों से ठोस कचरे को कुशलतापूर्वक इकट्ठा करना था। एकत्र किए गए कचरे को फिर मटेरियल रिकवरी फैसिलिटी में ले जाया जाता था, जहाँ पर पर्यावरण मित्र प्लास्टिक सामग्री को अलग करके कॉम्पैक्ट करते थे। यह पहल टिकाऊ कचरा प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ावा देने और समुदाय में प्लास्टिक कचरे के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए लागू की गई थी। नगर पालिका परिषद् ने वर्षों से इन प्रथाओं को सफलतापूर्वक बनाए रखा है। वर्तमान में, मटेरियल रिकवरी सेन्टर पर सूखा कचरा एकत्र किया जाता है और 35 अलग–अलग श्रेणियों में छांटा जाता है। फिर कचरे को कॉम्पैक्ट करके शहर के बाहर बेचा जाता है, जिससे नगर पालिका की आय में वृद्धि होती है। यह अभिनव अपशिष्ट प्रबंधन दृष्टिकोण ना केवल पर्यावरण को लाभ पहुँचाता है बल्कि नगर पालिका परिषद् की वित्तीय स्थिरता में भी योगदान देता है।

प्लास्टिक कचरा प्रबन्धन में कार्यरत कार्मिक

जोशीमठ नगर पंचायत वर्तमान में अपने संसाधनों से इस मटेरियल रिकवरी फैसिलिटी (एम.आर.एफ) का संचालन कर रही है। एमआरएफ की स्थापना वर्ष 2010–11 में की गई थी, जिसमें 7 सफाई कर्मचारी कार्यरत हैं, जिन्हें प्रतिदिन 250 रुपये का पारिश्रमिक दिया जाता है। वर्तमान में केंद्र में 20 सफाई कर्मचारी कार्यरत हैं, जिनमें से प्रत्येक को प्रतिदिन 550 रुपये मिलते हैं।

प्रयास से सफलता

शहर में लागू किए गए अभिनव प्रयासों ने पर्यावरण के बारे में निवासियों में जागरूकता बढ़ाने में सफलता प्राप्त की है। परिणामस्वरूप, कूड़ा–कचरा फैलाने की प्रवृत्ति में काफी कमी आई है, और लोग अब अपने कचरे का जिम्मेदारी से निपटान कर रहे हैं। शहर ने पर्यावरण के अनुकूल वाहनों का उपयोग करके घर–घर जाकर कचरा संग्रहण प्रणाली को अपनाया है, जो फिर एक मटेरियल रिकवरी फैसिलिटी (एमआरएफ) केंद्र पर कचरे को छांटता है, एक कॉम्पैक्टर मशीन का उपयोग करके इसे कॉम्पैक्ट करता है, और पुनर्चक्रण योग्य वस्तुओं को बेचता है। इस व्यापक कचरा प्रबंधन प्रणाली ने पूरे शहर में कचरे के ढेर की उपस्थिति को प्रभावी ढंग से समाप्त कर दिया है, जिससे जोशीमठ एक कचरा–मुक्त शहर बन गया है।

वर्ष 2010–11 में स्कीइंग विंटर गेम औली के दौरान पर्यटन विभाग के सौजन्य से नगर पालिका को एक कॉम्पेक्टर मशीन निःशुल्क प्राप्त हुई थी, जिसकी क्षमता 150 किलोग्राम प्रति बंडल है, जो प्लास्टिक कचरे को कॉम्पैक्ट करने और आसानी से परिवहन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है

पुरूस्कार एवं सम्मान

- अजैविक अपशिष्ट प्रबंधन के लिए नगर पालिका परिषद् जोशीमठ को वर्ष 2010–11 में मुख्यमंत्री निर्मल नगर पुरस्कार द्वितीय तथा वर्ष 2016–17 में मुख्यमंत्री निर्मल नगर उत्कृष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- इस सफल प्रयास को स्वच्छ भारत मिशन के 10 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा देश के 75 शहरों से स्वच्छता हेतु किये गये अभिनव प्रयासों को "Tales from 75 Cities, Journey of Swachhata" पुस्तक में Joshimath Community Driven Waste Management Success शीर्षक में प्रकाशित किया गया है।

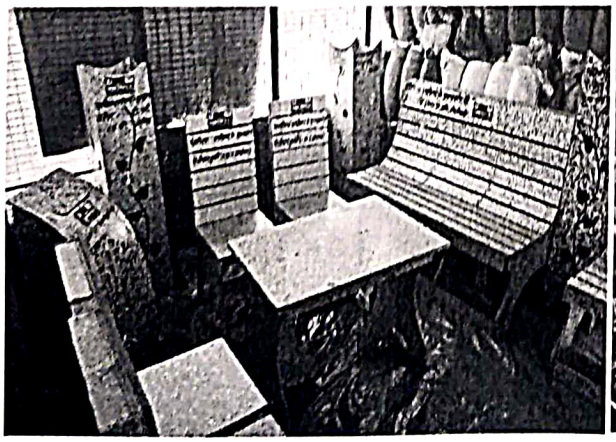

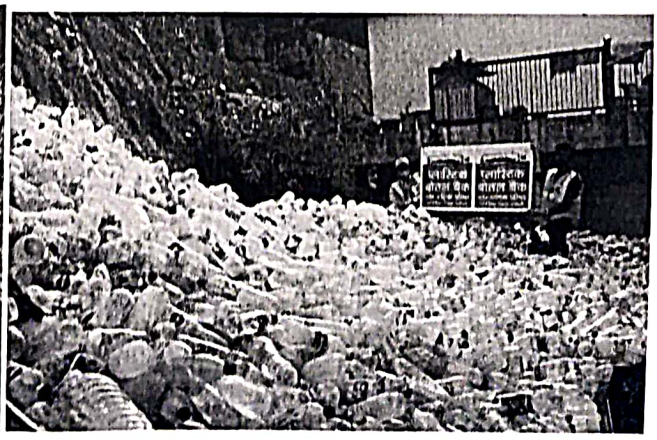

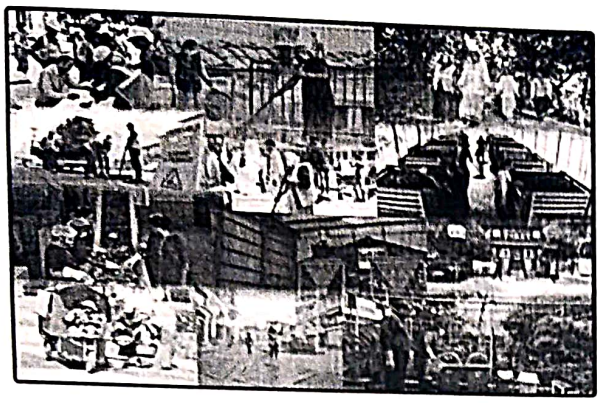

Tales From 75 Cities

JOURNEY OF SWACHHATA

To join the World's Largest Jan Andolan for Swachhata, Scan the QR code or visit www.swachhatahiseva.gov.in

Joshimath's Community-Driven Waste Management Success

Joshimath, Uttarakhand is a gateway to numerous Himalayan treks and sacred pilgrim sites like Badrinath and Hemkund Sahib. With a population of around 16,709 that swells to nearly half a million during the pilgrimage season, the town faced significant environmental challenges, particularly in managing plastic waste. Recognising the urgency, Nagar Palika Parishad Joshimath, with the support of the local community, in 2010, implemented an innovative Material Recovery Facility (MRF), transforming the town's waste into a resource.

The MRF collects, segregates, and compacts solid waste, a task made even more challenging by the town's rugged terrain. With a dedicated team of sanitation workers, the project has empowered the local community by offering stable employment and generating income from the sale of recyclable materials. Initially starting with seven sanitation workers earning Rs 250 per day, the team has since expanded, with each worker now earning Rs 550 per day, reflecting the success of the initiative.

Regular plastic waste collection and processing have fostered environmental consciousness among residents, drastically reducing litter. The revenue generated from selling recyclable materials has not only provided livelihoods for marginalised workers but also bolstered the municipality's funds.

Since December 2022, over 1.3 million kilograms of inorganic waste have been compacted and sold, generating more than 1 crore in income. The compactor machine, gifted by the Tourism Department, has played a vital role, processing up to 150 kilograms per bundle of plastic waste, helping maintain Joshimath's pristine environment and reducing litter. This initiative has earned the town prestigious awards, including the Chief Minister Nirmal Nagar Excellent Puraskar during 2010-2011 and 2016-2017. Today, Joshimath has become a model for waste-free towns.